मार्टिन लूथर किंग

डेविड ऐडलर, चित्र: रोबर्टा   हिंदी: विदूषक
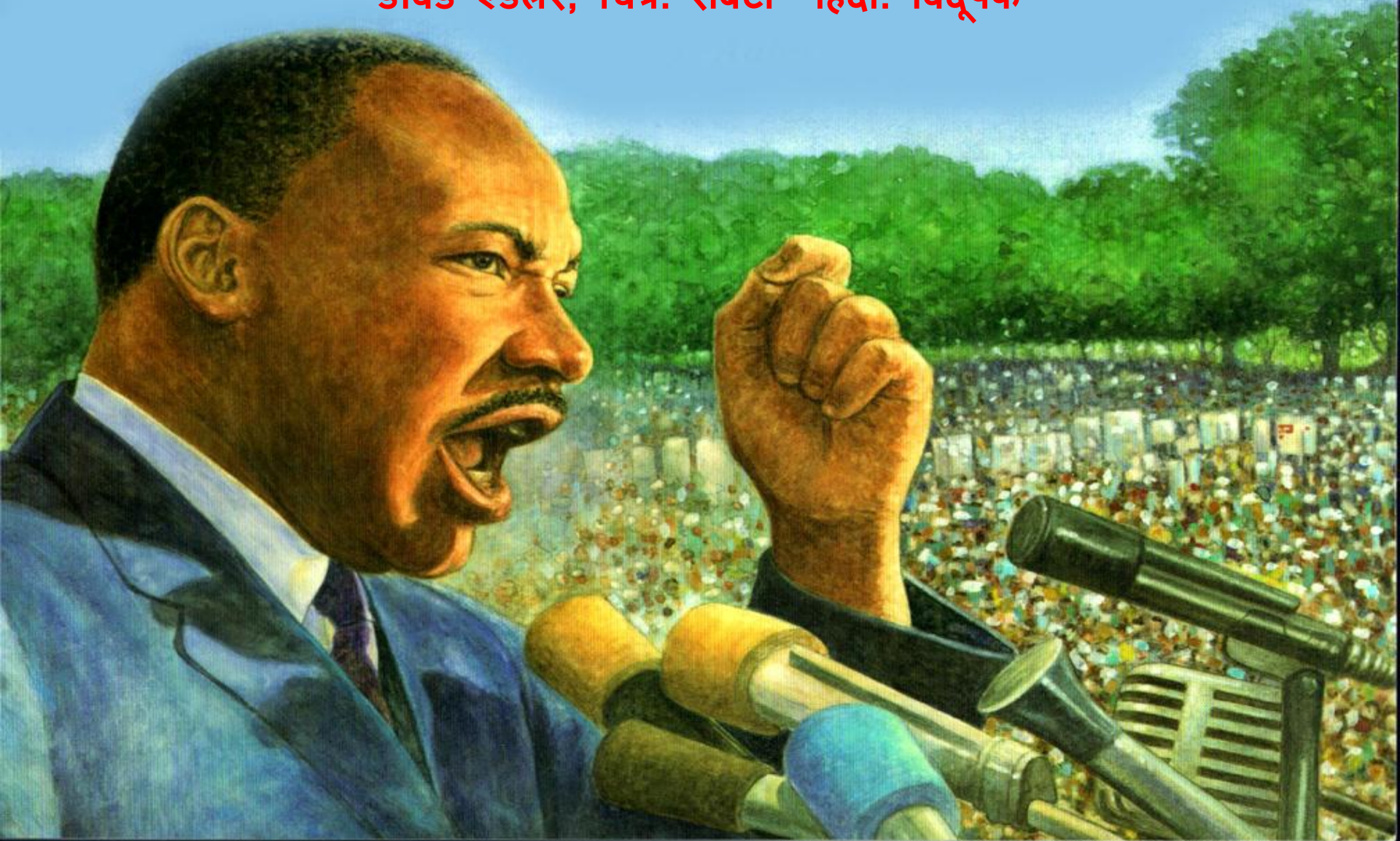
मार्टिन लूथर किंग जूनियर अमरीका के महान लीडरों में से एक थे. वो एक ओजस्वी वक्ता थे. उन्होंने उन कानूनों की ज़ोरदार खिलाफत की जो अश्वेत (ब्लैक) लोगों को, स्कूलों और नौकरियों से बाहर रखते थे. उन्होंने नाजायज़ कानूनों के विरोध में मोर्चे निकाले और सभी लोगों के लिए न्यायसंगत कानूनों की मांग की.
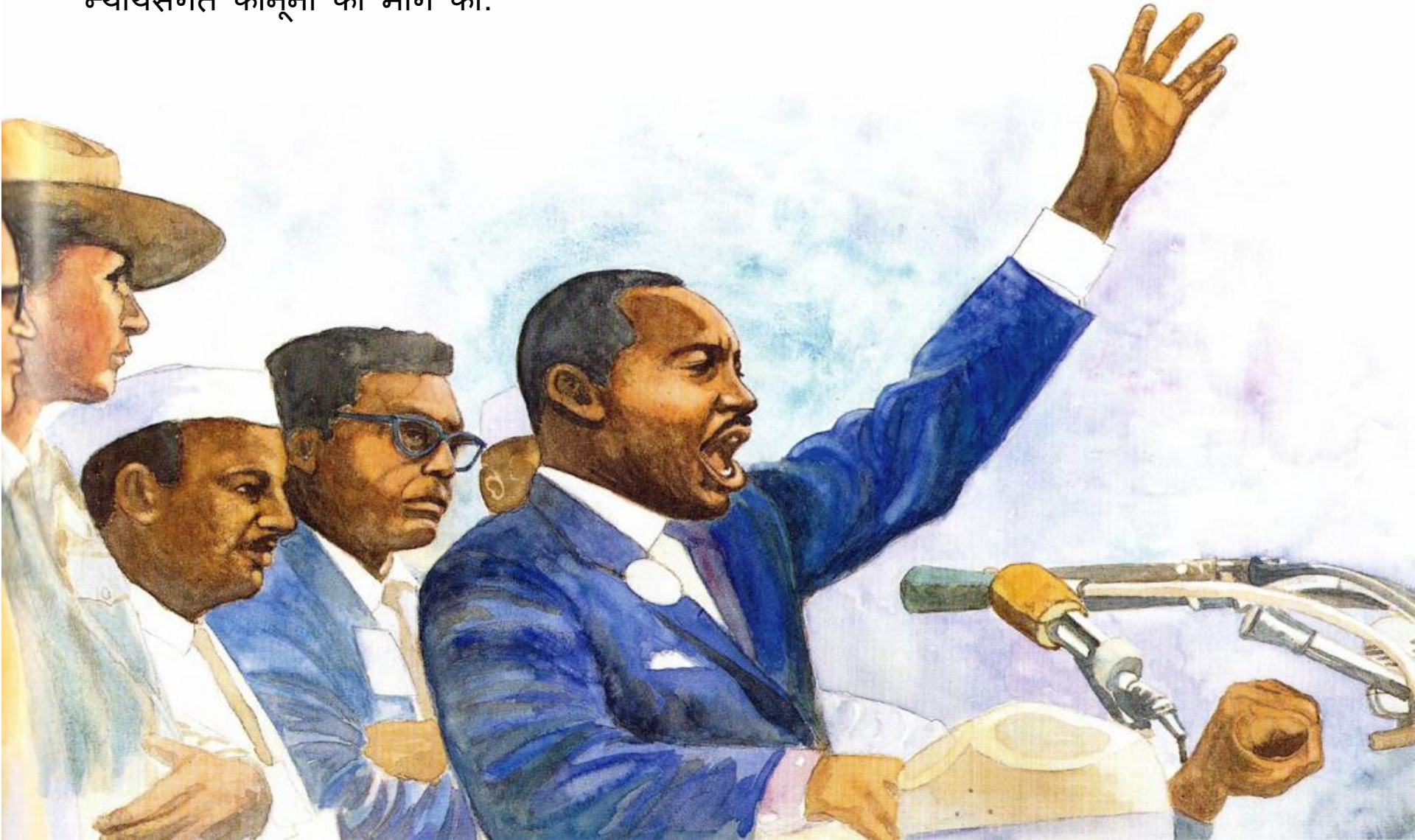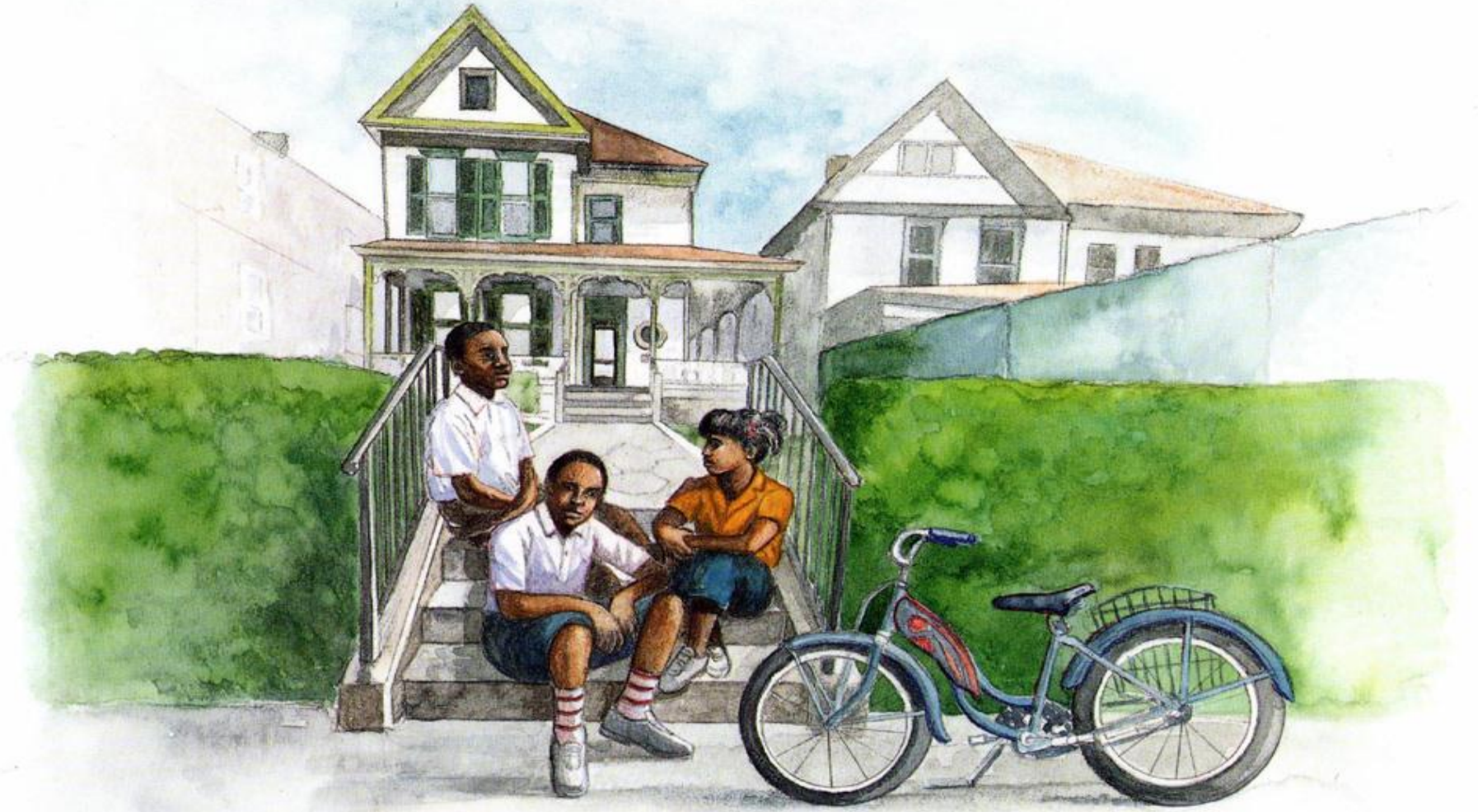
मार्टिन लूथर किंग का जन्म जनवरी 15, 1929 को एटलांटा, जॉर्जिया में हुआ. उनके पिता एक पादरी थे. उनकी माँ ने बहुत समय तक स्कूल में पढ़ाया.

मार्टिन की एक बड़ी बहन थी – विली क्रिस्टीन, और एक छोटा भाई था – अल्फ्रेड डेनियल.

युवा मार्टिन को बेसबॉल, फुटबाल और बास्केटबॉल के खेल पसंद थे. उसे साइकिल चलाने और गाने का भी शौक था. मार्टिन, अक्सर पिता के चर्च में गाया करता था.
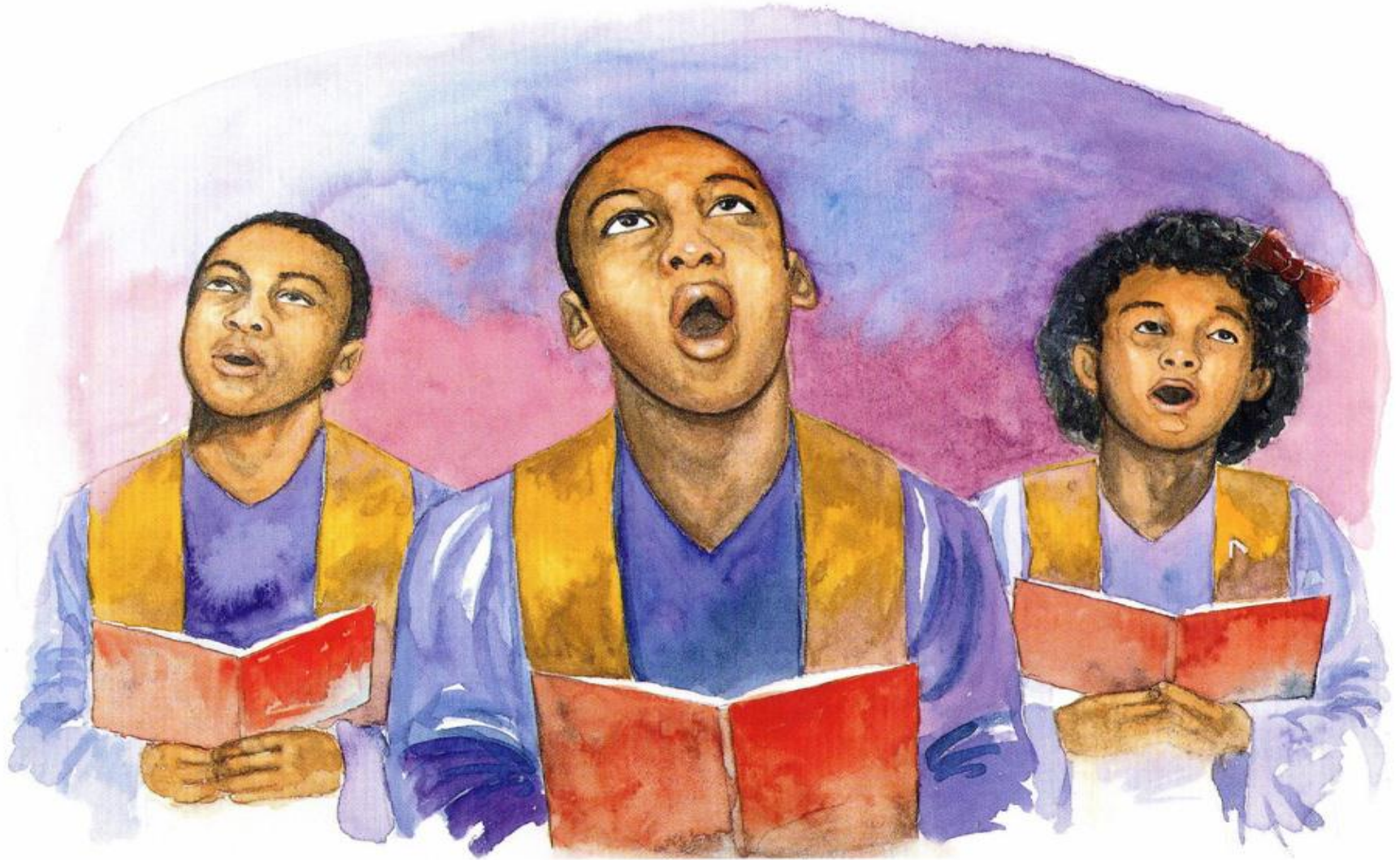
मार्टिन (बीच में) अपने छोटे भाई अल्फ्रेड डेनियल (बाएं) और बहन विली क्रिस्टीन (दाएं) के साथ
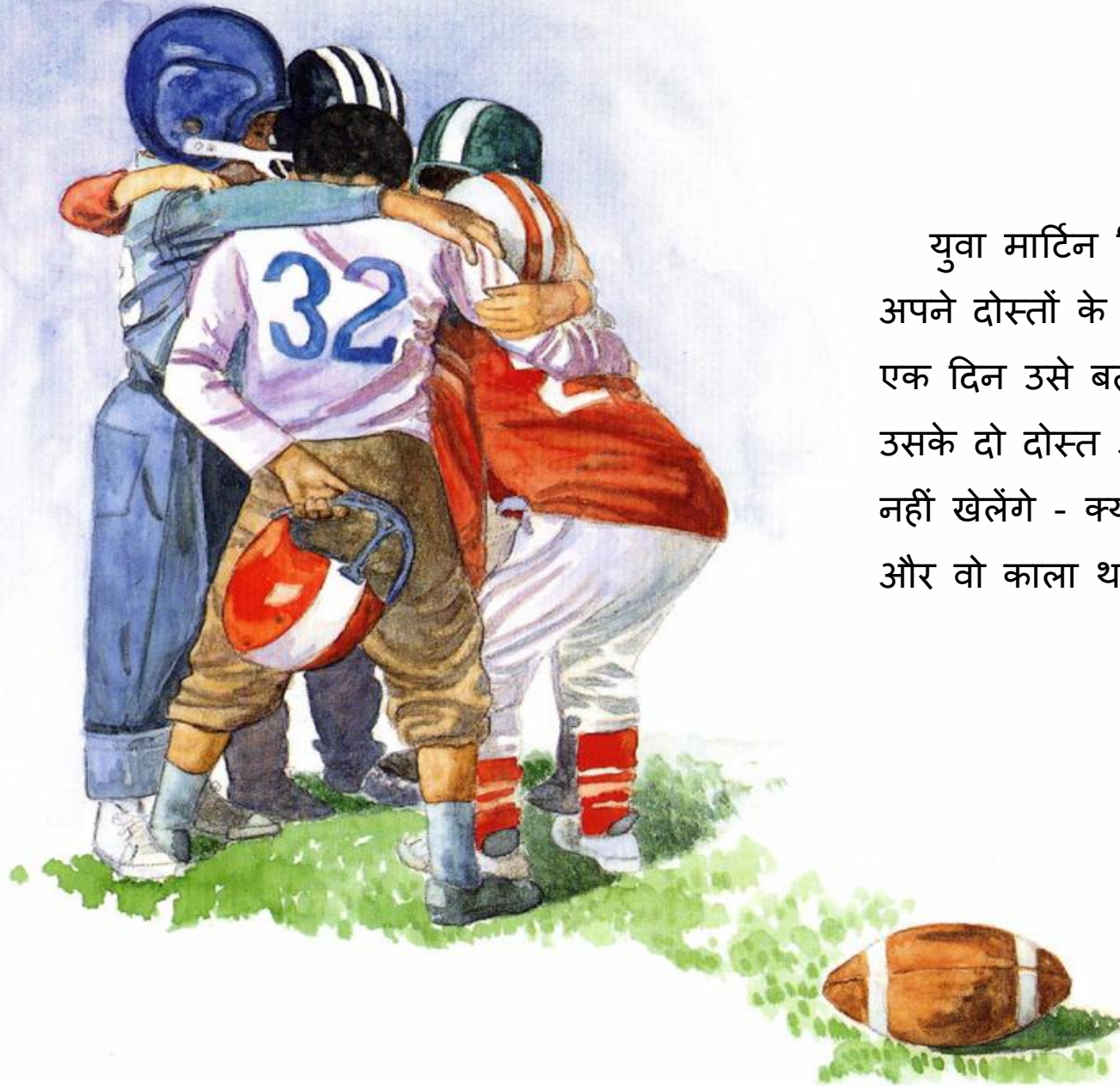
युवा मार्टिन पिछवाड़े में अपने दोस्तों के साथ खेलता था. एक दिन उसे बताया गया कि उसके दो दोस्त अब उसके साथ नहीं खेलेंगे - क्योंकि वे गोरे थे, और वो काला था.
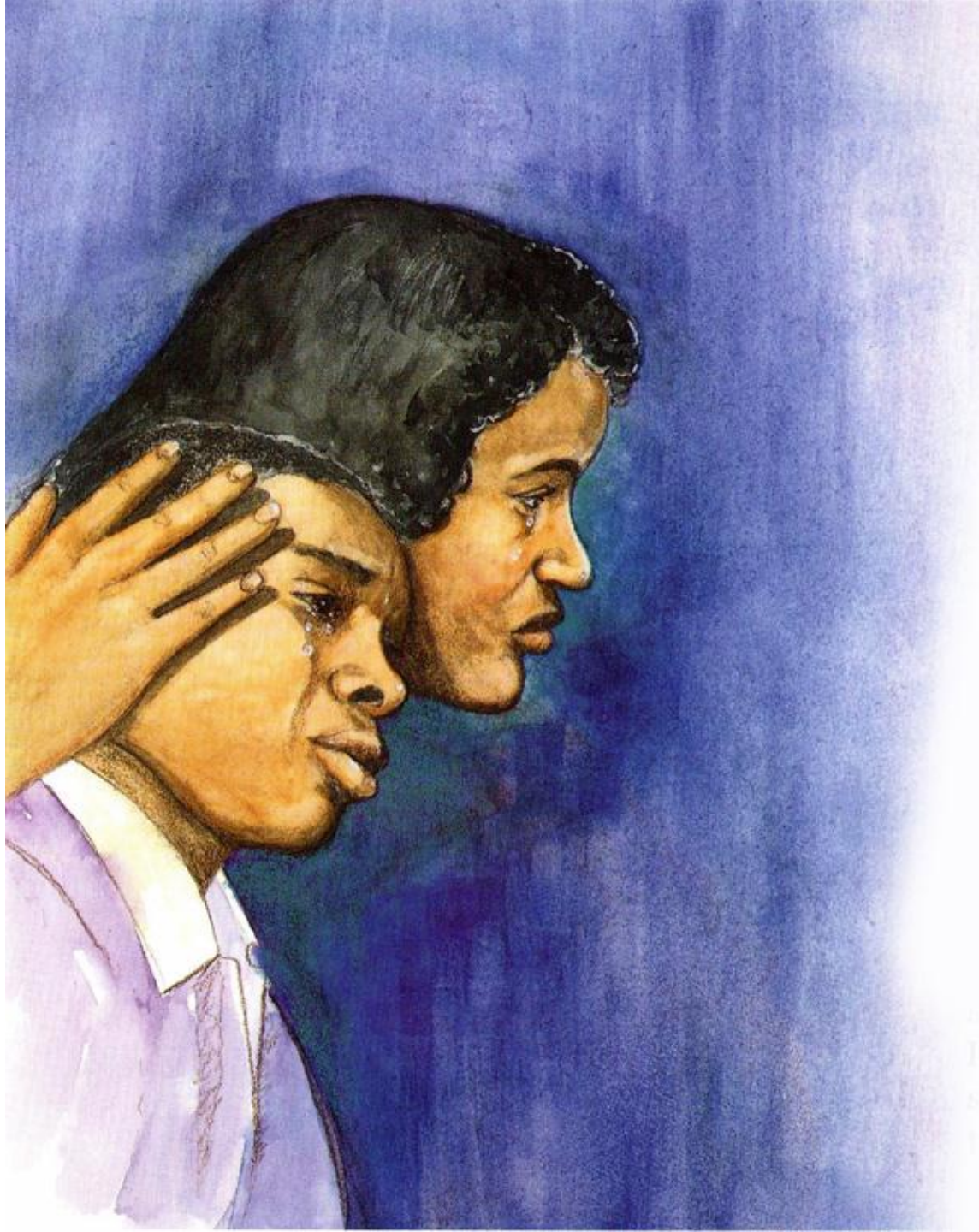
यह सुनकर मार्टिन रोने लगा. उसे यह समझ में नहीं आया कि भला उसकी चमड़ी के रंग से, किसी को क्या फर्क पड़ सकता है.

मार्टिन की माँ ने उसे बताया कि बहुत पहले अश्वेत लोगों को हथकड़ियाँ डालकर अमरीका लाया गया था. फिर उन्हें गुलामों जैसे बेचा गया था. माँ ने यह भी बताया कि मार्टिन के जन्म से बहुत पहले ही गुलाम आज़ाद हो गए थे. अश्वेतों के आज़ाद होने के बाद भी, कुछ लोग अभी भी उनके साथ न्यायसंगत व्यव्हार नहीं करते थे.

सिर्फ
गोरों के
लिए
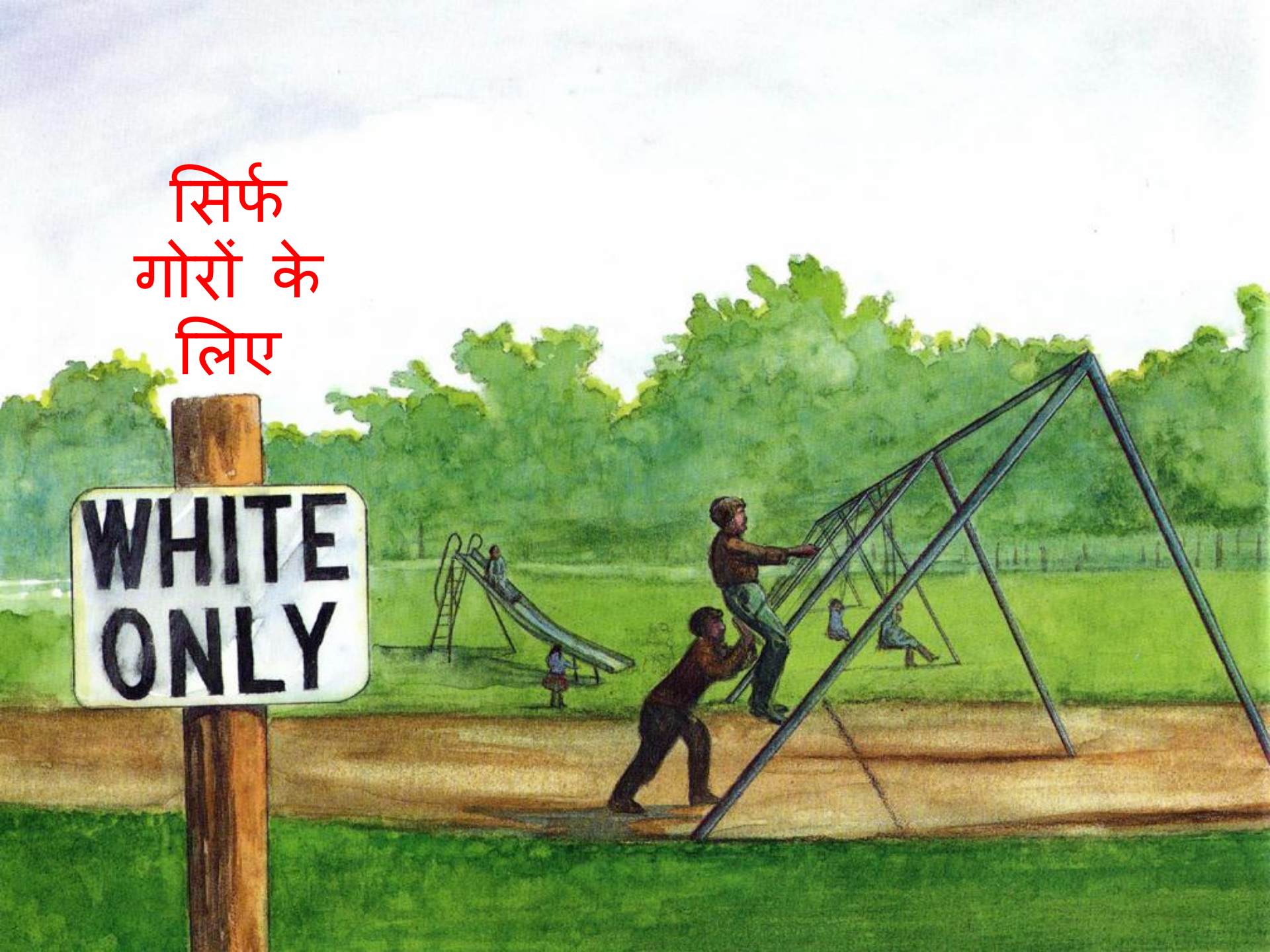
मार्टिन के शहर एटलांटा और पूरे अमरीका में जगह-जगह, **“सिर्फ गोरों के लिए”** साईन-बोर्ड लगे थे. अश्वेत लोग कुछ पार्कों, स्विमिंग-पूलों, होटलों, रेस्टोरेंट और स्कूलों में, घुस तक नहीं सकते थे. अश्वेत लोग तमाम नौकरियों से भी वंचित थे.
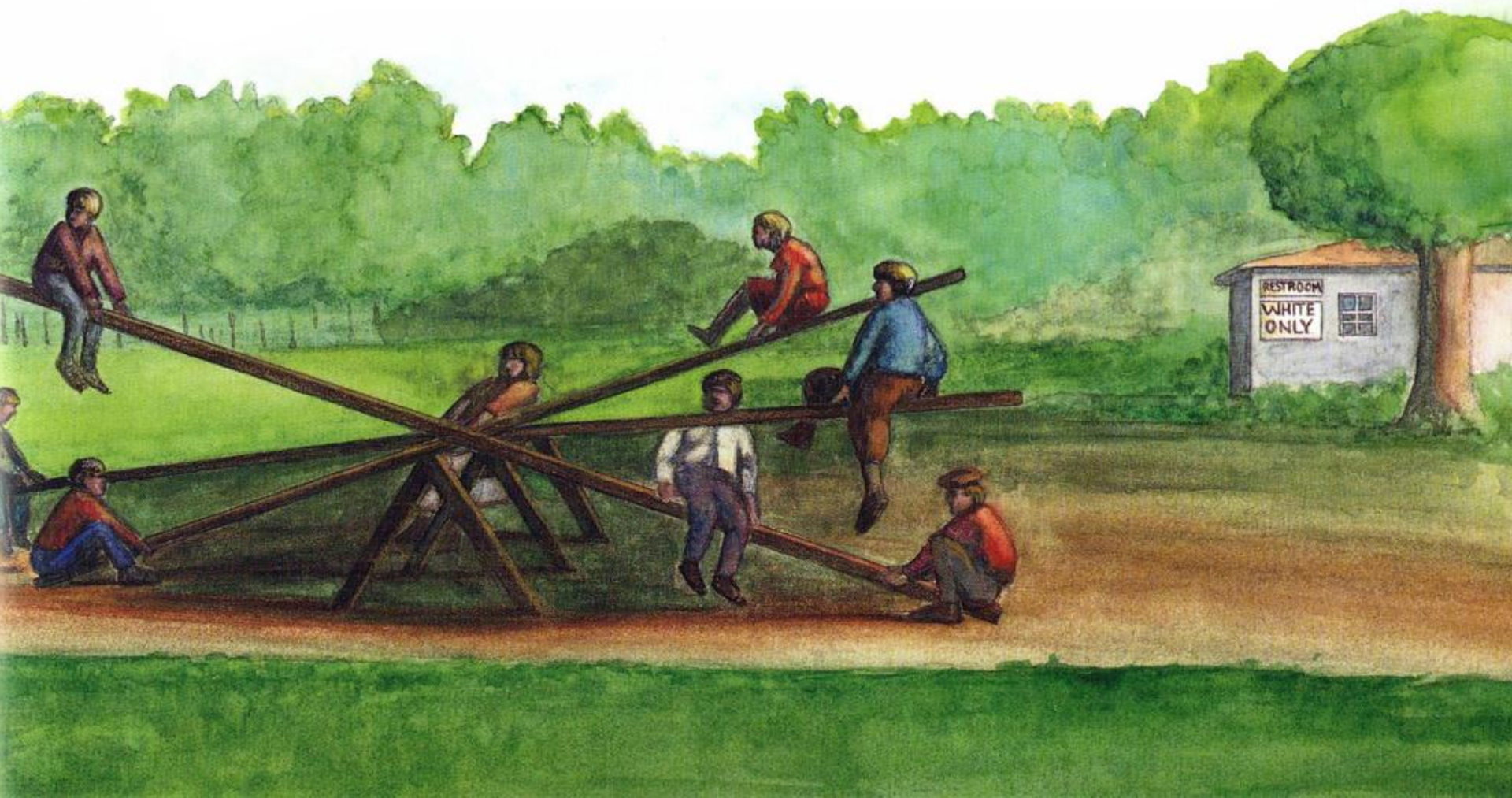
स्कूल जाने से पहले ही, मार्टिन ने घर पर पढ़ना सीखा. बचपन में ही उसने अश्वेत लीडरों के बारे में सारी किताबें पढ़ डालीं.

मार्टिन पढ़ाई में बहुत तेज़ था. उसने दो साल पहले ही हाई-स्कूल की परीक्षा पास कर ली. एटलांटा के मोरहाउस कॉलेज में दाखिला लेते वक्त, वो सिर्फ पंद्रह साल का था. कॉलेज में मार्टिन ने, चर्च का पादरी बनने का निश्चय किया.
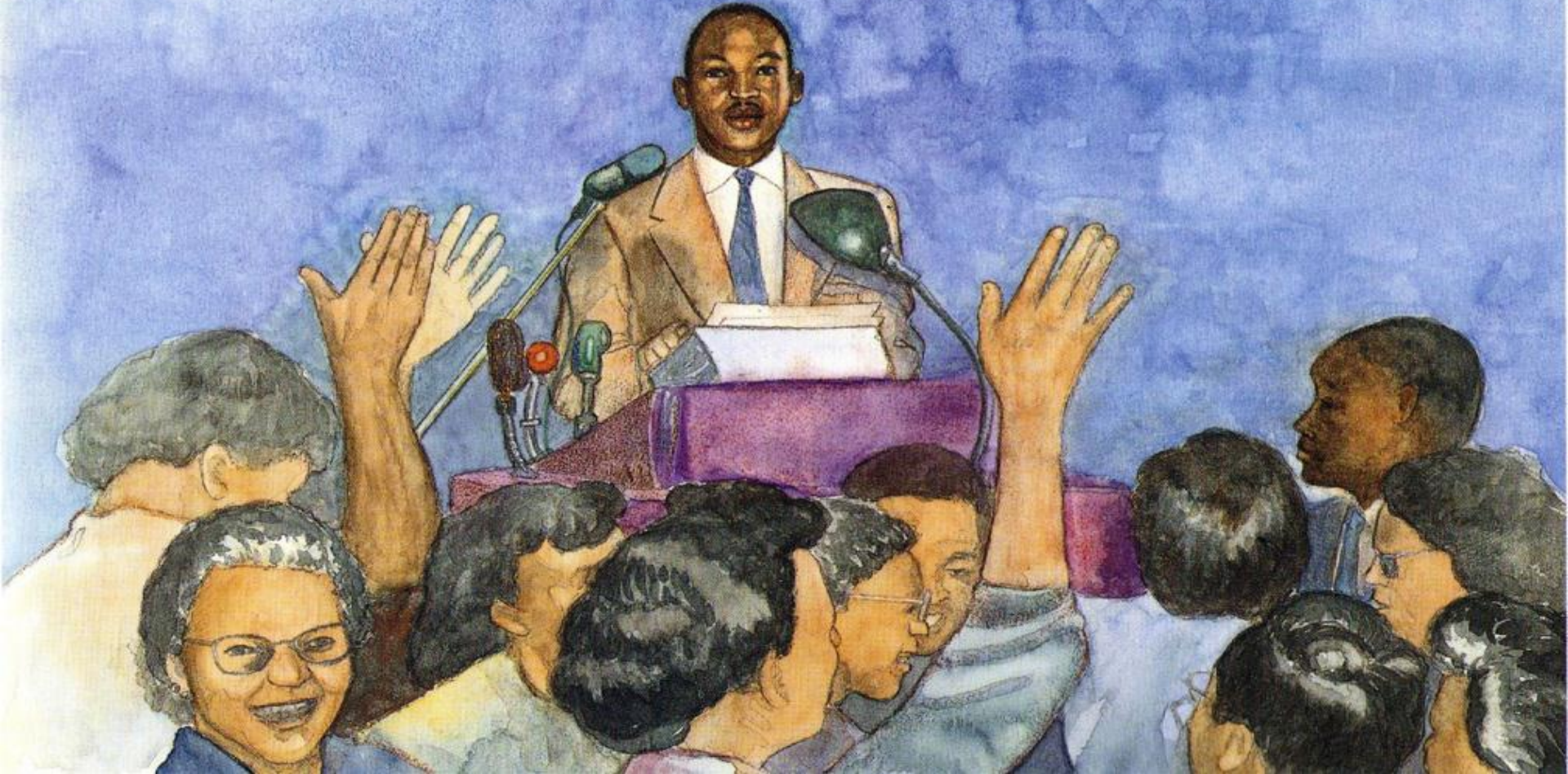
मोरहाउस कॉलेज से स्नातक की डिग्री हासिल करने के बाद मार्टिन ने बोस्टन यूनिवर्सिटी में डॉक्टरेट की पढ़ाई की. वहां पढ़ते हुए उसकी मुलाकात कोरिट्टा स्कॉट से हुई. वो वहां संगीत सीख रही थीं. दोनों में प्रेम हुआ और बाद में उन्होंने शादी की.

1954 में मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने एक पादरी की हैसियत से मोंट्गोमेरी, अलाबामा में अपनी पहली नौकरी शुरू की. अगले ही साल एक अश्वेत महिला - रोज़ा पार्कस को, मोंट्गोमेरी में गिरफ्तार किया गया. क्यों? वो बस में **"सिर्फ गोरों के लिए"** वाले हिस्से के पीछे बैठी थी. जब वहां सब सीटें भर गईं तब ड्राईवर ने रोज़ा पार्कस से उठने को कहा, जिससे कि एक गोरा आदमी उस सीट पर बैठ सके. रोज़ा पार्कस ने यह करने से साफ़ इन्कार कर दिया.
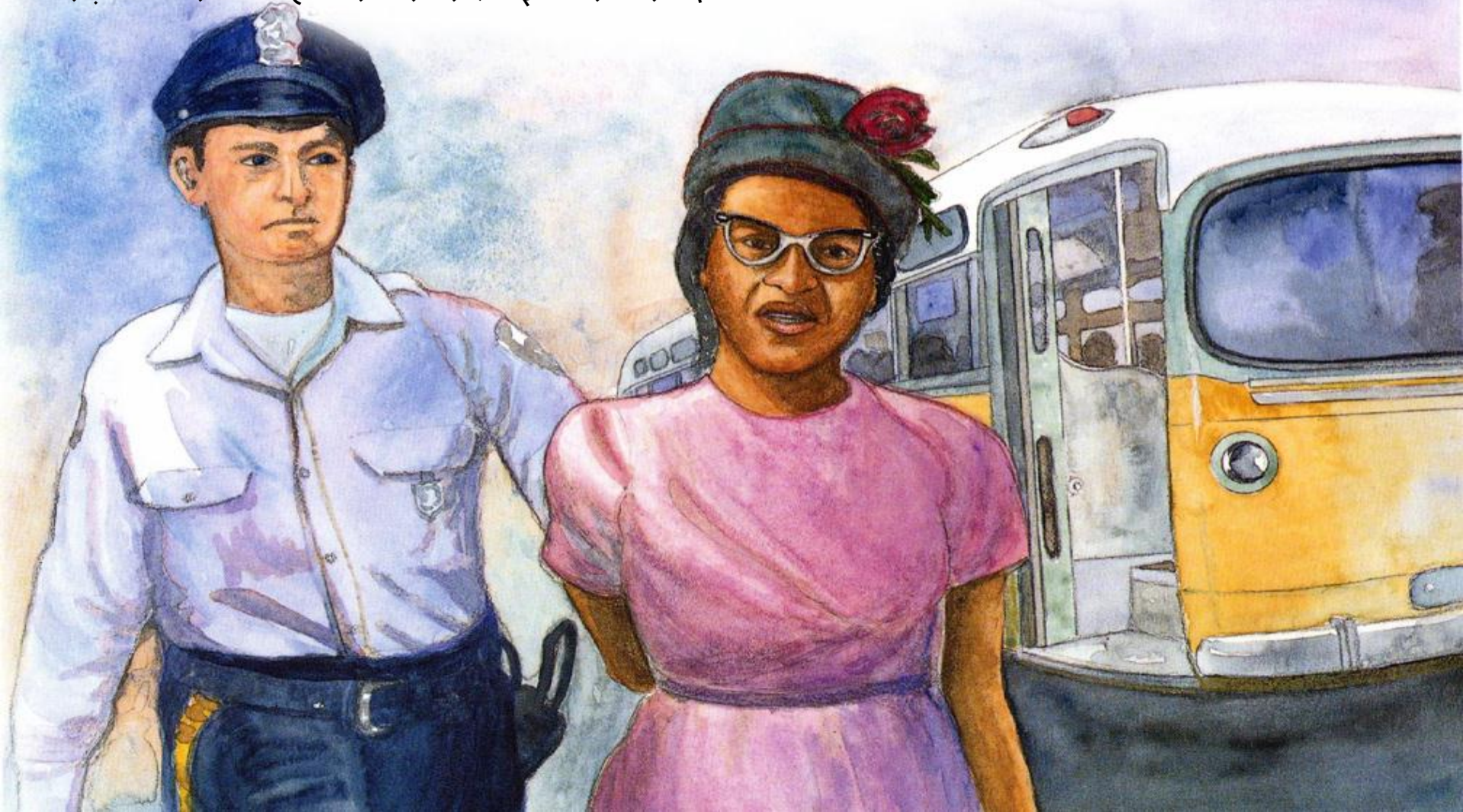
डॉ. मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने इस अन्याय को लेकर विरोध प्रदर्शन किया. पूरे शहर में अश्वेत लोगों ने पब्लिक बसों का बहिष्कार किया. डॉ. किंग ने कहा, “एक ऐसा समय आता है, जब लोग ठोकर खा-खाकर परेशान हो जाते हैं.”
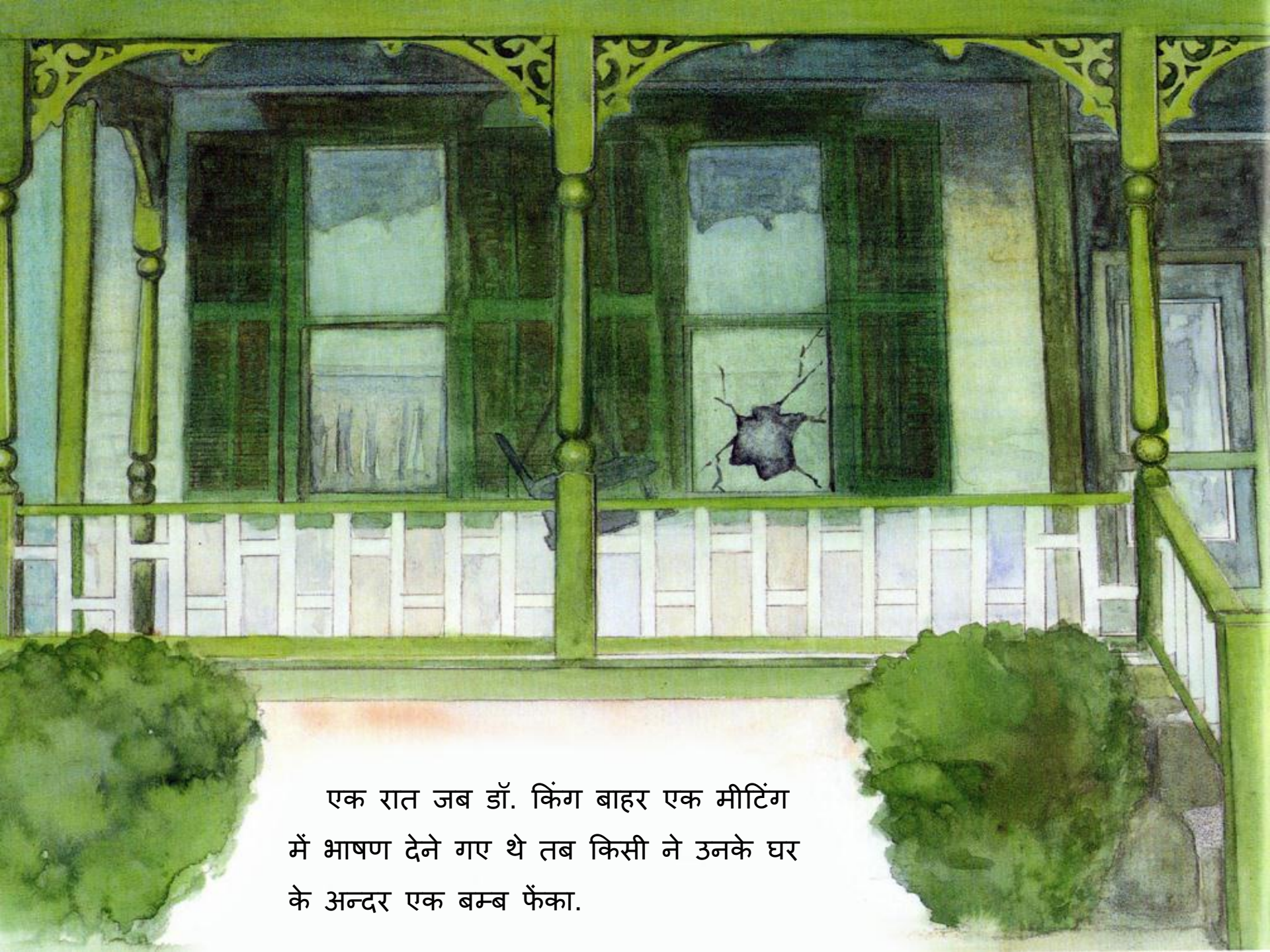
एक रात जब डॉ. किंग बाहर एक मीटिंग में भाषण देने गए थे तब किसी ने उनके घर के अन्दर एक बम्ब फेंका.
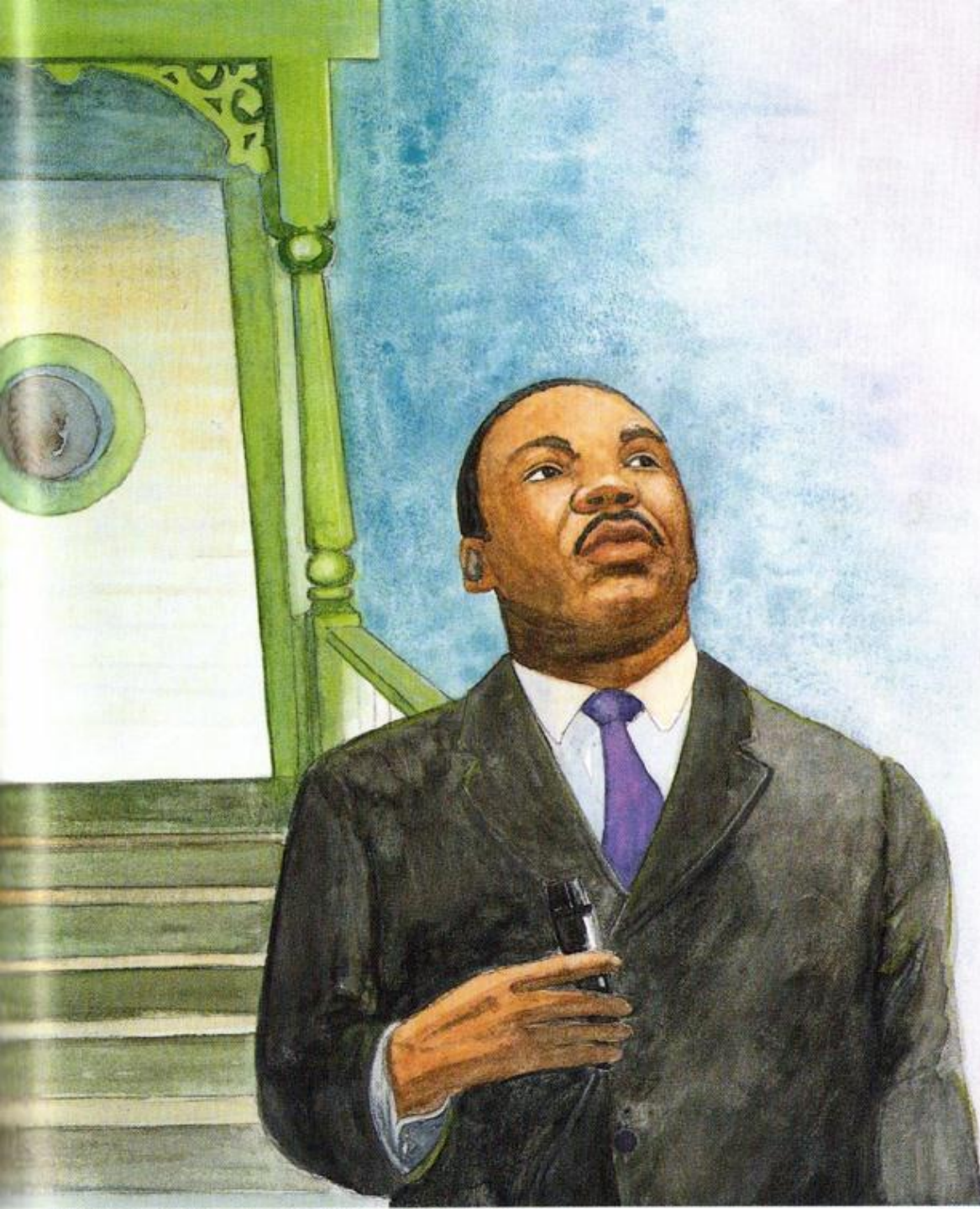
मार्टिन के समर्थक इससे बहुत नाराज़ और गुस्सा हुए. पर मार्टिन ने उनसे शांति से घर जाने को कहा. “हमें अपने गोरे भाईयों से भी प्रेम करना चाहिए,” उन्होंने कहा. “हमें नफरत को प्रेम से निबटना चाहिए.”

पब्लिक बसों के खिलाफ विरोध, लगभग साल भर चला. आन्दोलन तब ख़त्म हुआ जब बसों से **“सिर्फ गोरों के लिए”** वाले साईन-बोर्ड हटाए गए.
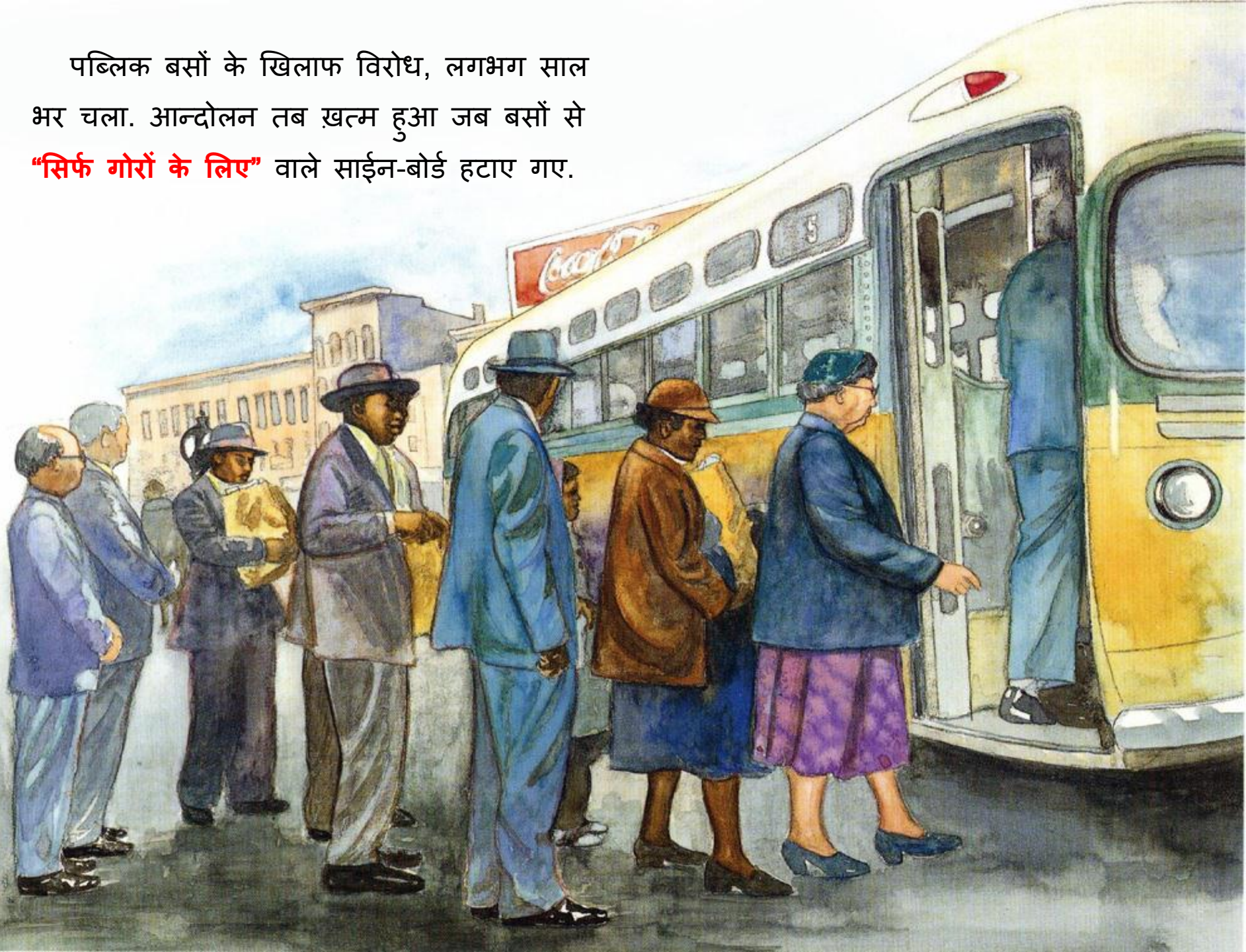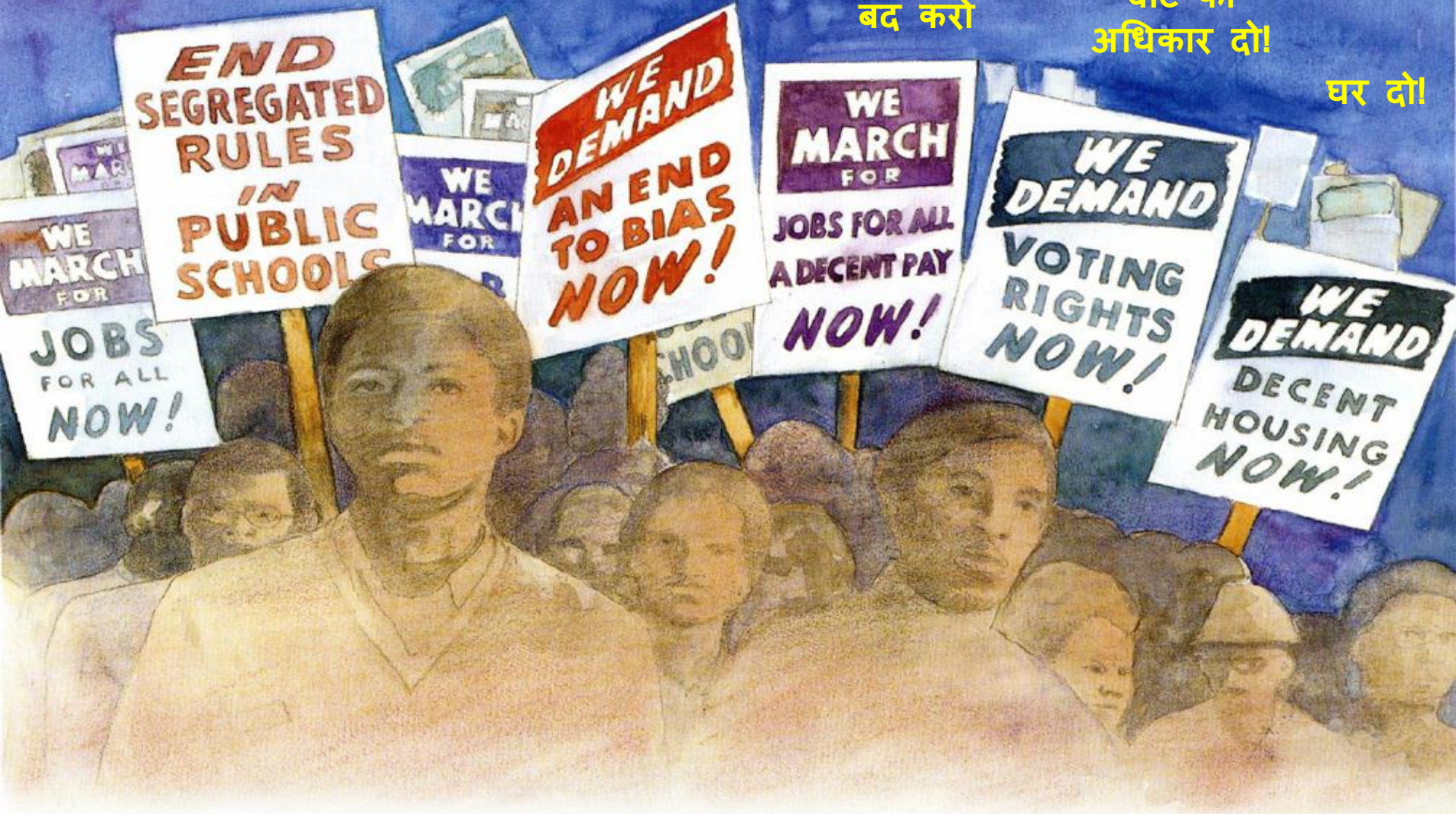
1960 में, डॉ. किंग ने एटलांटा वापिस जाने का निर्णय लिया. वहां वो **"सिर्फ गोरों के लिए"** सुरक्षित वेटिंग-रूम, शौचालयों और होटलों के खिलाफ शान्ति से विरोध करते रहे. उन्होंने मुक्ति और आज़ादी के लिए कई मोर्चे और प्रदर्शन निकाले.

1963 में, डॉ. किंग ने एक विशाल प्रदर्शन आयोजित किया – वाशिंगटन मोर्चा. इस जलूस में 2-लाख से अधिक अश्वेत और गोरे लोग उनके पीछे-पीछे चले. “मेरा एक सपना है,” उन्होंने अपने भाषण में कहा. “मेरा एक सपना है - कि एक दिन मेरे चारों बच्चे एक ऐसे देश में साँस लें, जहाँ उनका मूल्यांकन उनकी चमड़ी के “रंग” की बजाए उनके चरित्र के आधार पर हो.”
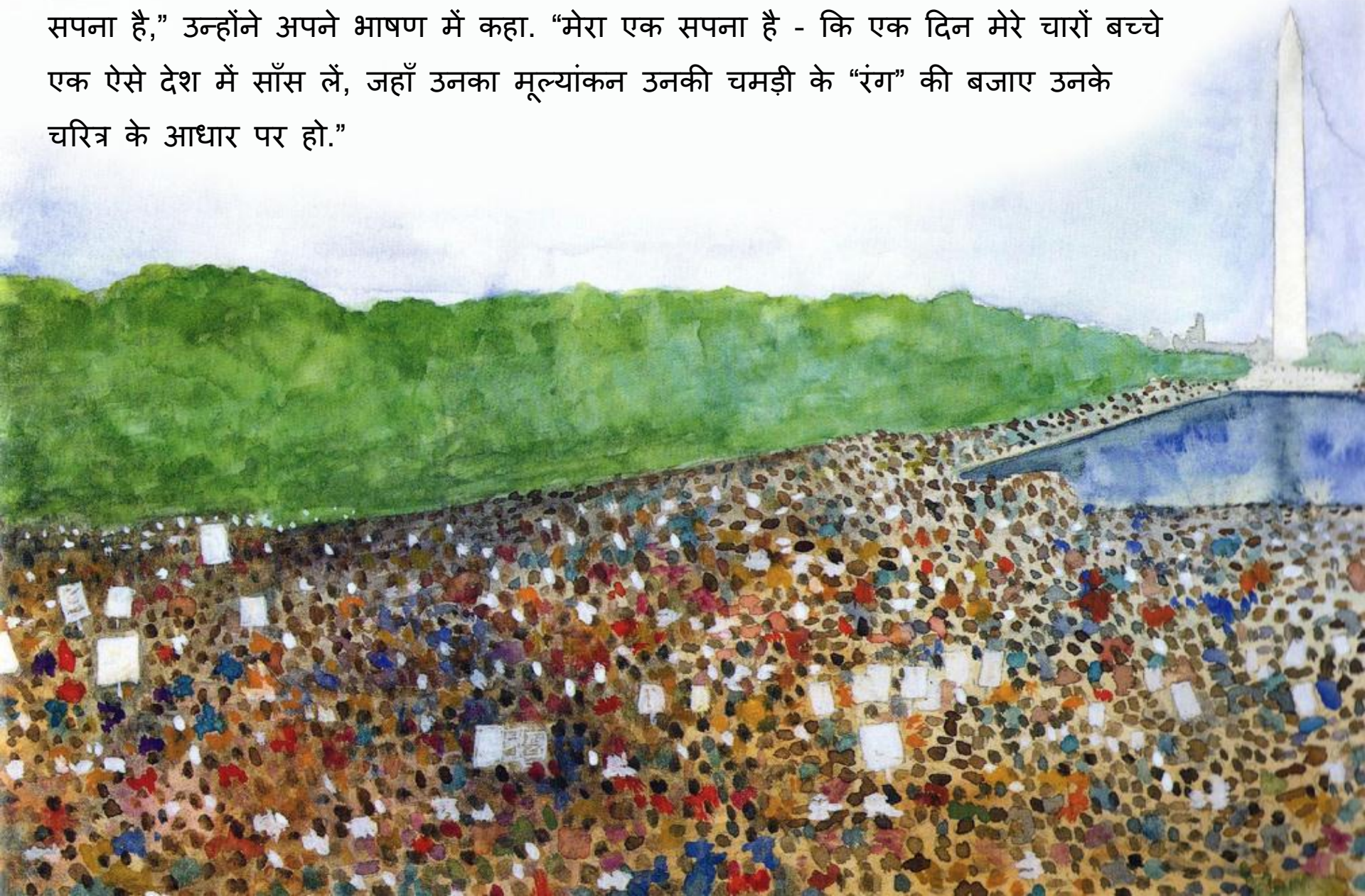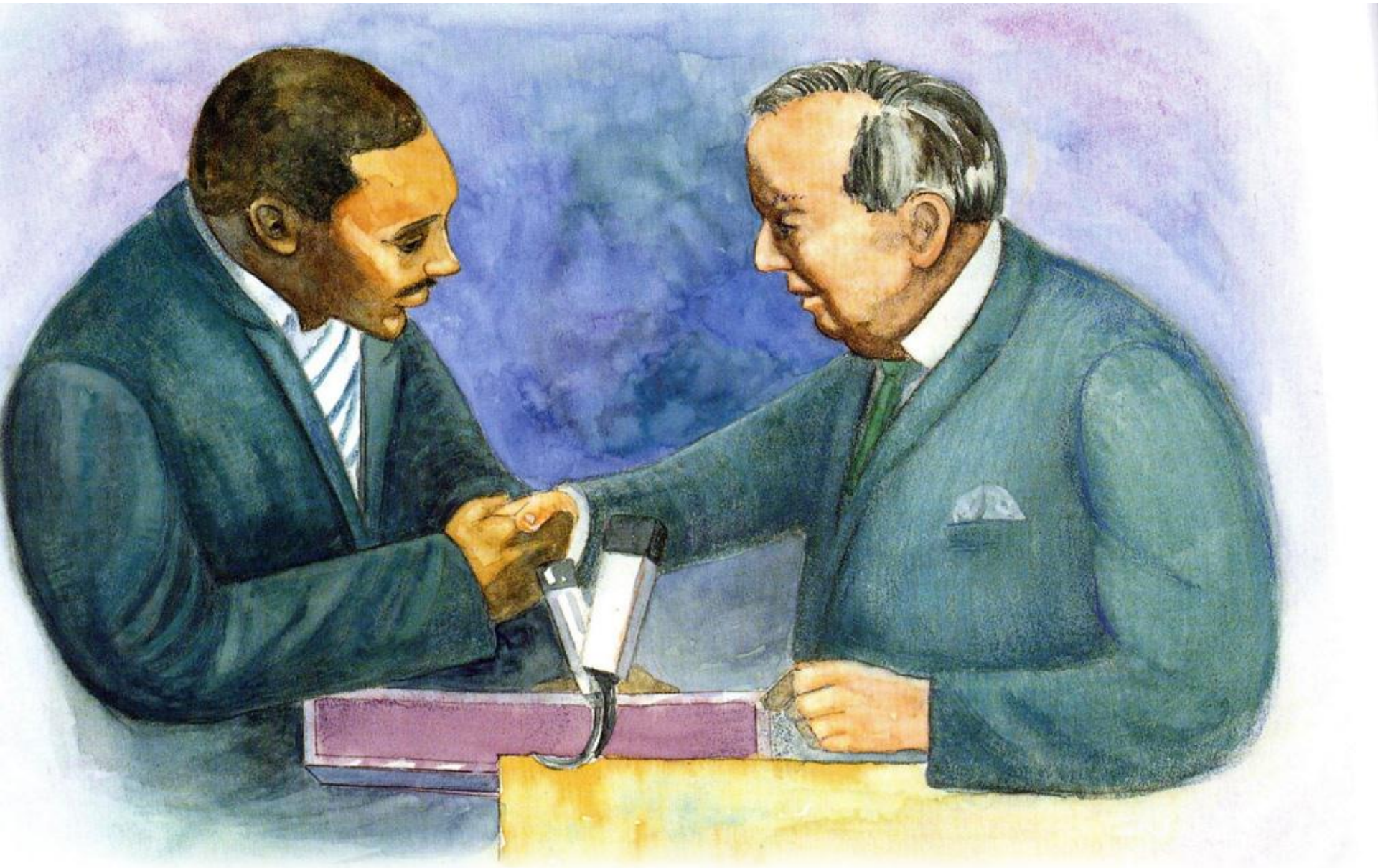
अगले साल 1964 में, डॉ. किंग को दुनिया के सबसे महान पुरुस्कार - नोबल-प्राइज से नवाज़ा गया.

सिर्फ गोरों के लिए
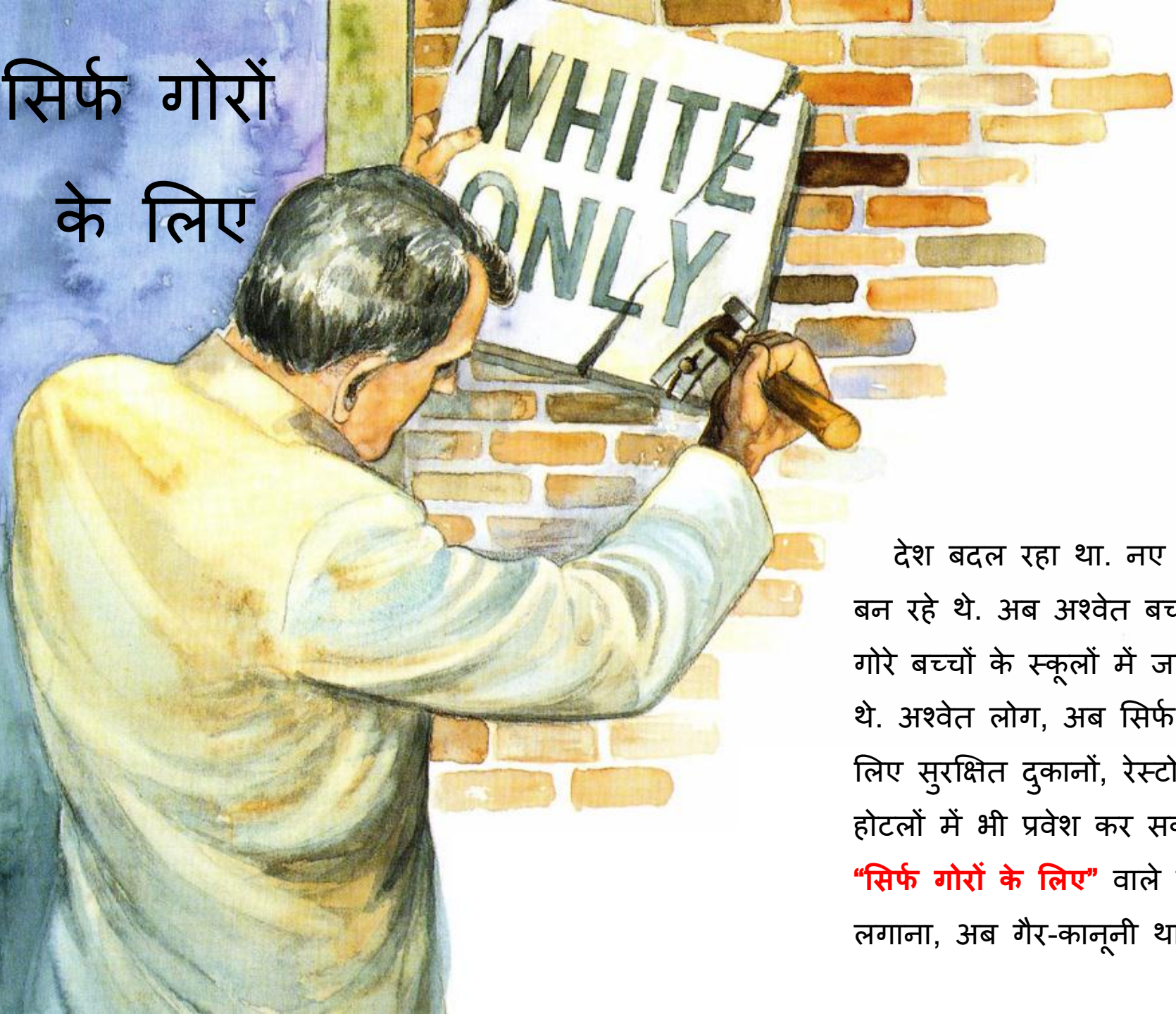
देश बदल रहा था. नए क़ानून बन रहे थे. अब अश्वेत बच्चे भी गोरे बच्चों के स्कूलों में जा सकते थे. अश्वेत लोग, अब सिर्फ गोरों के लिए सुरक्षित दुकानों, रेस्टोरेंट्स और होटलों में भी प्रवेश कर सकते थे. **"सिर्फ गोरों के लिए"** वाले साईन-बोर्ड लगाना, अब गैर-कानूनी था.

डॉ. किंग ने अपने समर्थकों से हमेशा शांतिपूर्ण विरोध करने की अपील की. पर उसके बावजूद कहीं-कहीं दंगे भी हुए और हिंसा भी फैली.
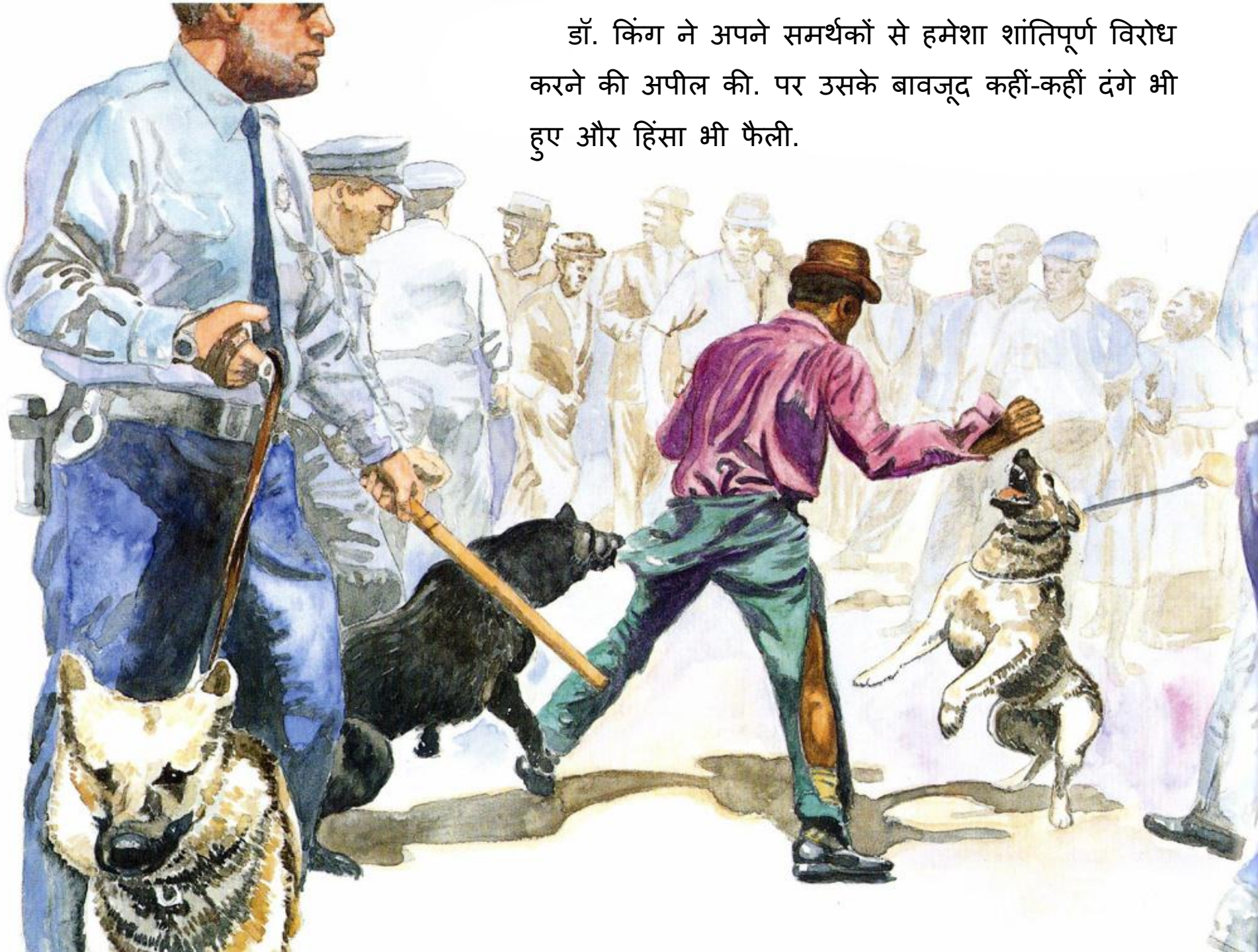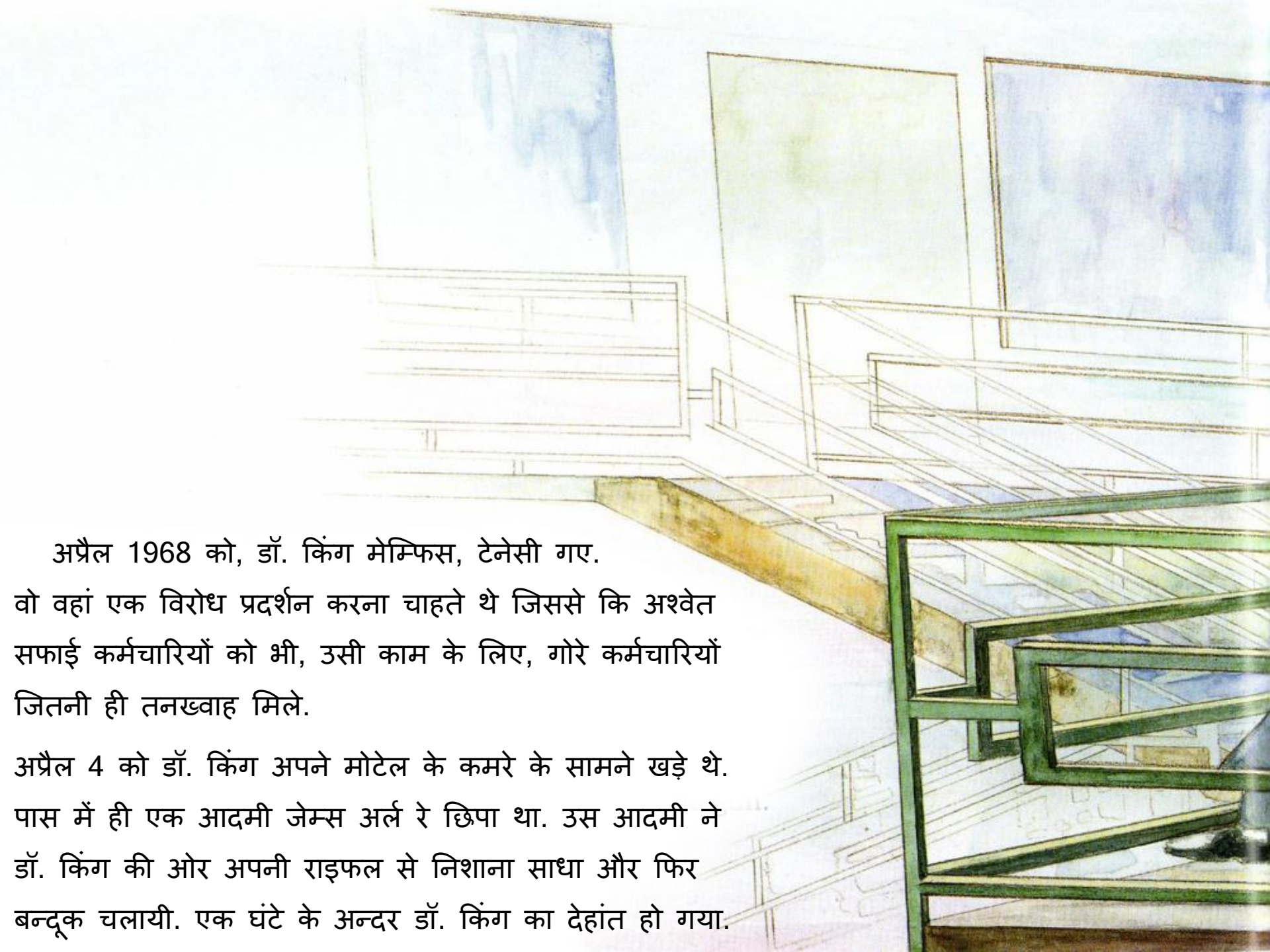
अप्रैल 1968 को, डॉ. किंग मेम्फिस, टेनेसी गए. वो वहां एक विरोध प्रदर्शन करना चाहते थे जिससे कि अश्वेत सफाई कर्मचारियों को भी, उसी काम के लिए, गोरे कर्मचारियों जितनी ही तनख्वाह मिले.

अप्रैल 4 को डॉ. किंग अपने मोटेल के कमरे के सामने खड़े थे. पास में ही एक आदमी जेम्स अर्ल रे छिपा था. उस आदमी ने डॉ. किंग की ओर अपनी राइफल से निशाना साधा और फिर बन्दूक चलायी. एक घंटे के अन्दर डॉ. किंग का देहांत हो गया.

मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने एक ऐसी दुनिया का सपना संजोया - जो नफरत, पूर्वाग्रहों, और हिंसा से मुक्त हो.

उनकी कब्र के पत्थर में यह शब्द अंकित हैं, “अब, मैं मुक्त हूँ.”
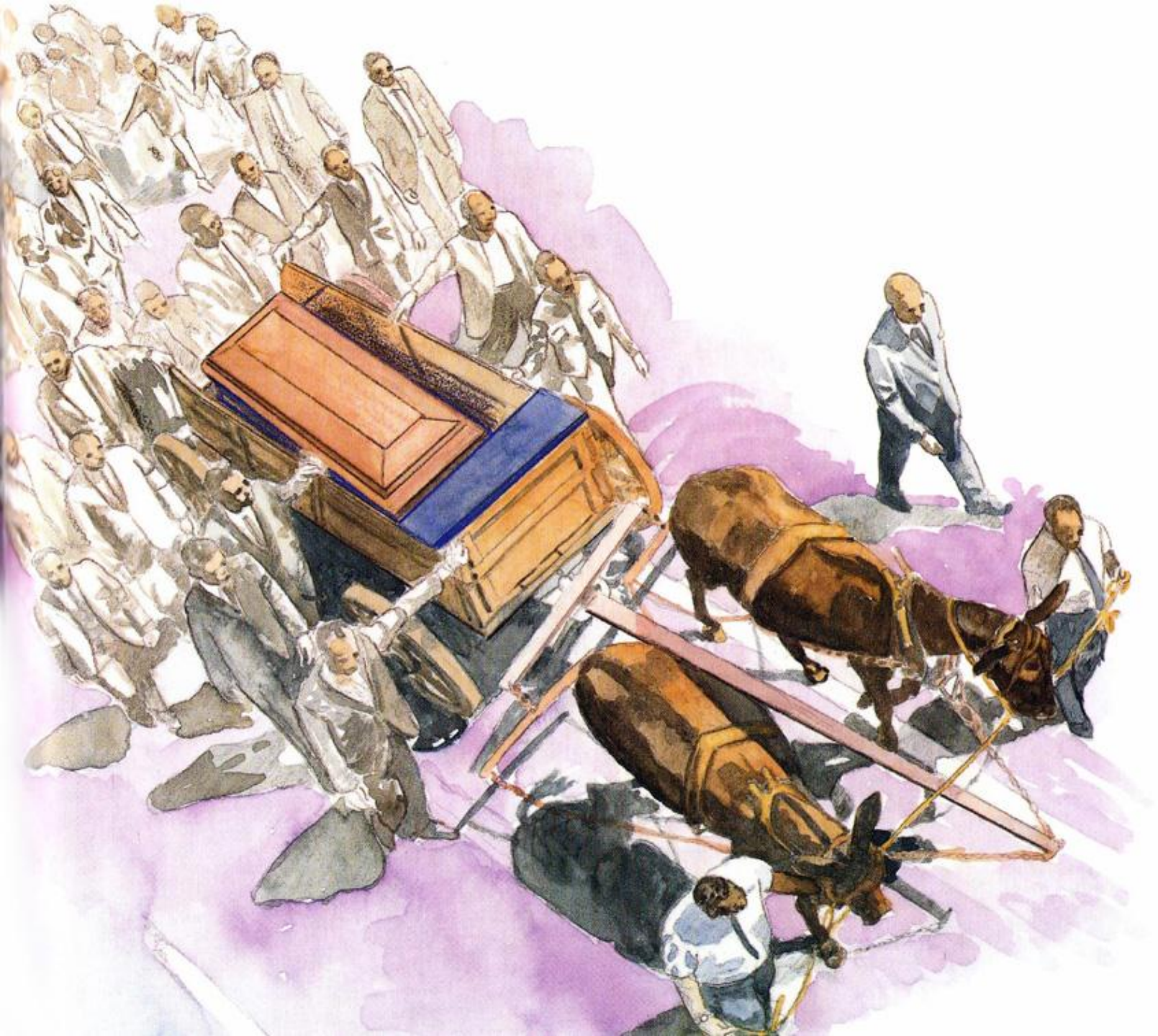
महत्वपूर्ण तिथियाँ

1929	15 जनवरी को एटलांटा, जॉर्जिया में जन्म
1947	चर्च के पादरी बने
1953	कोरिट्टा स्कॉट से मैरीओन, अलाबामा में विवाह
1955-56	मोंट्गोमेरी, अलाबामा में बस बहिष्कार की अगुवाई
1963	28 अगस्त को वाशिंगटन में बड़े प्रदर्शन की अगुवाई. लिंकन मेमोरियल की सीढ़ियों से प्रसिद्ध भाषण दिया “मेरा एक सपना है...”
1964	नोबल पुरुस्कार से सम्मानित
1968	4 अप्रैल को मेम्फिस, टेनेसी में हत्या
1983	हर जनवरी के तीसरे सोमवार को, मार्टिन लूथर किंग जूनियर के जीवन और आदर्शों के सत्कार के लिए, अमरीकी कांग्रेस ने राष्ट्रीय छुट्टी घोषित की

मार्टिन लूथर किंग पर सचित्र पुस्तक